

पतंजलि योग की अवधारणा

वर्षा¹ and डॉ. दिलीप कुमार तिवारी²

शोध छात्र, योग विज्ञान विभाग, ए के एस विश्वविद्यालय, सतना म. प्र.¹

सहायक आचार्य, योग विज्ञान विभाग, ए के एस विश्वविद्यालय, सतना म. प्र.²

शोध सारांश : योग कीर्ति को प्रत्येक जन मानस तक पहुँचाने व मानव को महामानव बनाने वाली प्रक्रिया योग विद्या का रहस्य जितना गूढ़ माना जाता है। उसके कहीं अधिक योग विद्या के प्रणेता महर्षि पतंजलि का जीवन चरित्र है। योग के क्षेत्र में महर्षि का जीवन चरित्र वस्तुतः जो जन सामान्य के सामने हैं, परंतु आज भी उनके जीवन के ऐसे अनसुलझे पहलू हैं। जिनसे मानव मात्र अनभिज्ञ है। उनका सम्पूर्ण जीवन रहस्य से अभीभूत माना जाता है। उनका सम्पूर्ण जीवन योग के प्रति समर्पित था। अपने जीवन काल में उन्होंने बहुत से उत्कृष्ट कार्य किए परंतु योग क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत सराहनीय रहा। योग के क्षेत्र में उनके योगदान का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके द्वारा रचित योग सूत्र वर्तमान काल में भी योग का एक अद्वितीय ग्रंथ माना जाता है। जिसका साक्षी आज भी कोई ग्रंथ नहीं है।

मुख्य शब्द : महर्षि पतंजलि, योग, समाधि पाद, साधन पाद, विभूति पाद, कैवल्य पाद।